प्रश्न करना
(QUESTIONING)

प्रश्नों के माध्यम से अपने शिष्य को ज्ञान प्रदान करना कोई नवीन प्रत्यय नहीं है। प्राचीन काल में गुरु अपने शिष्य को विभिन्न प्रश्नों के द्वारा ही शिक्षा दिया करते थे। सुप्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात ने एक ऐसी ही विधि विकसित की जिसमें वह अपने शिष्यों से अनेक प्रश्न पूछता था तथा विद्यार्थी उनका उत्तर देते-देते ज्ञानार्जन कर लेता था। आज भी 'प्रश्नोत्तर' को सुकरात-विधि (Socratic Method) कहते हैं।

प्रश्न पूछने की कला इतनी प्राचीन होते हुए भी महत्त्वपूर्ण मानी जाती है तथा इसका शिक्षण में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। प्रश्नों के माध्यम से अध्यापक शिक्षण-प्रक्रिया तथा शिक्षार्थी से सम्बन्धित कई महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त कर सकता है जैसे विद्यार्थियों का ज्ञान व अवबोध का स्तर, उनकी विषय के प्रति अभिवृत्ति, ग्रहण किये हुए ज्ञान में त्रुटियाँ, अध्यापन की प्रभावशीलता आदि। प्रश्नों को शिक्षक तथा शिक्षार्थी के मध्य एक सम्पर्क-सूत्र माना है जो कि 'बेरोमीटर' जैसा कार्य करते हैं अर्थात् शिक्षक-शिक्षार्थी अन्त:क्रिया की प्रगति का अन्दाजा उनके मध्य चल रहे प्रश्नोत्तरों से किया जा सकता है।

शिक्षण की दृष्टि से प्रश्न करने की कला अध्यापक के लिए एक वरदान है। शिक्षा प्रदान करने के लिए यह एक उत्तम साधन माना गया है। इसके द्वारा अध्यापक विद्यार्थी के निकट आता है और उनको ज्ञान प्रदान करता है। शिक्षण में प्रेरणा का विशेष महत्त्व है परन्तु प्रश्न एक ऐसा माध्यम है जो कि बालक को पढ़ने के लिए प्रेरित भी कर सकता है। इस प्रकार शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया प्रश्न पूछने की कला से सम्बन्धित है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न पूछना एक कला है। यह कला अध्यापक की कुशलता पर निर्भर करती है। यदि एक अध्यापक योग्य है अर्थात् उसकी स्वयं की शैक्षिक उपलब्धि अच्छे स्तर की रही है फिर भी आवश्यक नहीं है कि वह अध्यापक बनने के बाद अच्छे प्रश्न पूछे सके। प्रश्न पूछने की कला को या तो वह स्वयं विकसित कर सकता है अथवा प्रशिक्षण से इसका विकास किया जाता है। स्वयं सीखने की प्रक्रिया 'भूल और प्रयास' पर आधारित है तथा अधिक समय लेती है जबकि प्रशिक्षण से इस कौशल को शीघ्रतापूर्वक तथा आसानी से सिखाया जा सकता है।

प्रश्न का महत्त्व (Importance of Question)

प्रश्न पूछने का शिक्षण–प्रक्रिया में बहुत अधिक महत्त्व है। प्रश्नों के महत्त्व के बारे में कुछ शिक्षाशास्त्रियों के विचार निम्न प्रकार से प्रस्तुत किये जा रहे हैं–

पार्कर (Parker)

"प्रश्न आदत–कौशल–स्तर के बाहर समस्त शैक्षिक प्रक्रिया की कुंजी है।"

रेमण्ड (Raymond)

"प्रश्न करने की एक उत्तम शैली की प्राप्ति निश्चय ही एक युवक–शिक्षक की 'आवश्यक महत्त्वाकांक्षा' होनी चाहिए।"

बोसिंग (Bossing)

"प्रश्न करने की कला का महत्त्व स्वीकारे बिना कोई भी शिक्षण–विधि सफलतापूर्वक लागू नहीं की जा सकती है।"

उपर्युक्त विचारों से यह प्रकट होता है कि शिक्षण–प्रक्रिया में 'प्रश्न करना' एक आवश्यक तत्त्व है। शिक्षक विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से छात्रों को उत्तर देने के लिए प्रेरित करता है तथा उनके लिए एक शैक्षिक पर्यावरण का निर्माण करता है। छात्र भी अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए अध्यापक से प्रश्न कर सकता है। दूसरे शब्दों में शिक्षक–शिक्षार्थी–अन्त:क्रिया प्रश्न पूछने तथा उत्तर देने से भली प्रकार से सम्पन्न हो सकती है। इसलिए 'प्रश्न' को शिक्षण में एक अनिवार्य तत्त्व माना गया है। यह शिक्षण–विधि को आधार प्रदान करता है। बोसिंग[1] (Bossing) ने इसीलिए कहा है कि "प्रश्न–कला, आदतों एवं कौशलों से अधिक महत्त्वपूर्ण है तथा इसे सभी शिक्षण–क्रियाओं की कुंजी माना गया है।"

रायबर्न[2] (Ryburn) ने भी प्रश्न करना अध्यापन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है। इसके अनुसार "यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि इस पाठ के सफल अध्यापन का आधार अध्यापक की प्रश्न कौशल योग्यता है।" प्रश्न शिक्षार्थी को प्रेरित कर उसके अधिगम की दिशा का निर्धारण करता है। अध्यापन की प्रभावशीलता को उसके द्वारा बनाये गये प्रश्नों के स्तर, प्रकार तथा कौशल से पूर्व में ही ज्ञात किया जा सकता है।

प्रश्न पूछने के उद्देश्य (OBJECTIVES OF QUESTIONING)

शिक्षण–प्रक्रिया में प्रश्न पूछने के अग्रलिखित उद्देश्य होते हैं–

---

1. Bossing, N. L. "Progressive Methods of Teaching in Secondary School".
2. Ed S. C. Parker in Methods of Teaching in High Schools Houghton Mifftin, P. 466.

Scanned with CamScanner

(1) शिक्षार्थी का ध्यान शिक्षण बिन्दुओं पर केन्द्रित रखने के लिए।
(2) शिक्षण-प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रखने के लिये।
(3) विद्यार्थी के पूर्व-ज्ञान तथा अभिरुचि का परीक्षण करने के लिये।
(4) शिक्षण के दौरान सीखी गई पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन करने के लिये।
(5) शिक्षक यह जान सके कि छात्र सीखे गये ज्ञान का अन्य परिस्थितियों में उपयोग कर सकेंगे या नहीं।
(6) सीखी गई पाठ्यवस्तु की पुनरावृत्ति करने के लिये।
(7) शिक्षार्थी की विचार अभिव्यक्त करने की शक्ति, स्मृति तथा कल्पना शक्ति को प्रेरित करने के लिये।

इस प्रकार कक्षा-शिक्षण में प्रश्न पूछा जाना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षाविदों का यह मानना है कि शिक्षण की सफलता अध्यापक की प्रश्न-कला पर निर्भर है।

प्रश्न कौशल के प्रमुख तत्त्व

प्रश्न-कला के अनेक तत्त्व हैं। इनमें कुछ सरल तथा कुछ जटिल भी हैं। ऐसे तत्त्व जो कि प्रश्न के मूल स्वरूप को बनाये रखने में मदद प्रदान करते हैं, आधारभूत तत्त्व कहलाते हैं। जटिल तत्त्व प्रश्न में रोचकता, सरसता तथा प्रभावशीलता लाने में सहायक है।

प्रश्न कला के मूल तत्त्व

(1) बनावट

प्रश्न की बनावट बोधगम्य तथा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए। कक्षा में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ होती हैं अर्थात् सभी शैक्षिक-स्तर के बालकों को शिक्षक को पढ़ाना पड़ता है। प्रश्न की बनावट इस प्रकार की होनी चाहिए कि कमजोर छात्र भी इसका हल ढूँढ़ने में समर्थ हों। इसके लिए प्रश्न आकार में छोटे, आवश्यक सूचना सहित स्पष्ट होने चाहिये। इनकी भाषा जटिल नहीं होनी चाहिए।

(2) केन्द्र

प्रत्येक प्रश्न ज्ञान के एक लघु भाग की ओर केन्द्रित कर पूछा जाता है। चूँकि ज्ञान का क्षेत्र असीमित है तथा उसे कुछ प्रश्नों से पूछा जाना सम्भव नहीं है, अत: प्रश्न एक सीमित क्षेत्र पर ही किया जाना चाहिए। इससे उसमें वस्तुनिष्ठता बढ़ेगी तथा इससे शिक्षार्थी का ध्यान केवल एक कार्य पर ही केन्द्रित होगा।

(3) दिशा

प्रश्न पूछने की दिशा से अभिप्राय 'प्रश्न किस प्रकार से पूछा जाय' से सम्बन्धित है। प्रश्न सर्वप्रथम पूरी कक्षा के सम्मुख पूछा जाना चाहिए। चन्द सैकण्ड रुक कर किसी छात्र विशेष की ओर इशारा कर प्रश्न पूछना अधिक प्रभावी होगा। पूरी कक्षा से प्रश्न पूछने से लाभ यह है कि यह सभी छात्रों को उत्तर सोचने के लिए प्रेरित करता है जबकि प्रारम्भ में ही किसी छात्र का नाम लेकर प्रश्न पूछने से केवल वह छात्र ही क्रियाशील रहेगा।

(4) प्रसार

प्रश्नों का प्रसार कक्षा में चारों ओर आकस्मिक रूप में होना चाहिए। केवल आगे बैठे अथवा चुने हुए विद्यार्थियों से प्रश्न पूछना उत्तम नहीं माना जाता। प्रसार से तात्पर्य प्रश्नों को अधिकतम छात्रों से पूछना है। इसकी अधिकता से अधिकतम छात्र कक्षा में क्रियाशील होंगे।

Scanned with CamScanner

प्रश्नकर्त्ता की मुद्रा

प्रश्न करने की उत्तम कला के अन्तर्गत मुद्रा भी एक तत्त्व माना गया है। प्रश्न को सीधे एवं सरल स्वभाव से पूछा जाना चाहिए। प्रश्न पूछने के बाद दो–तीन सैकण्ड रुक कर छात्रों से उत्तर देने को कहना चाहिए। प्रश्न उत्प्रेरक का कार्य करते हैं जिसके फलस्वरूप बालक में मानसिक क्रिया होती है। इस क्रिया के होने तथा उत्तर देने को 'क्रिया–काल' कहते हैं। अध्यापक को प्रत्येक प्रश्न के बाद यह 'क्रिया–काल' छात्रों को देना चाहिए।

प्रश्नों के प्रकार

चूँकि प्रश्न पूछने की कला में प्रमुख स्थान 'प्रश्न' का है अतः अध्यापक को प्रश्न के प्रकार का भी ज्ञान होना चाहिए। मानसिक प्रक्रिया के आधार पर प्रश्नों को निम्न दो प्रकार से बाँटा जा सकता है–

(अ) स्मृति–प्रश्न

(ब) विचार–प्रश्न।

स्मृति–प्रश्न–ये छात्रों के पूर्व पठित तथ्य, संख्या, परिभाषा, प्रक्रिया आदि से सम्बन्धित होते हैं तथा इनके उत्तर में शिक्षार्थी को अपनी स्मृति में उपस्थित ज्ञान को उत्तर के रूप में प्रकट करना होता है।

उदाहरण के लिए–

(1) संज्ञा की परिभाषा बताइये।

(2) संज्ञा के कितने भेद होते हैं ?

(3) समुच्चय किसे कहते हैं ?

(4) जलवायु की दृष्टि से भारत को कितने क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है ?

इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थी द्वारा सीखी गई पाठ्यवस्तु से सीधे सम्बन्धित हैं तथा उसका प्रत्यास्मरण करना होता है।

विचार–प्रश्न–इस प्रकार के प्रश्नों में छात्र को नवीन परिस्थिति में ज्ञान का उपयोग करना होता है चूँकि इसके उत्तर देने में छात्र को उच्च मानसिक स्तर का उपयोग करना होता है अतः ये प्रश्न अधिक कठिन स्तर के माने जाते हैं। उदाहरण के लिए कुछ प्रश्न निम्न प्रकार से हैं–

(1) प्रारम्भ में मानव–सभ्यता का विकास नदियों के किनारे ही क्यों हुआ ?

(2) रेल की पटरियों के बीच जगह क्यों छोड़ी जाती है ?

(3) यदि माँसाहारी जंगली पशु समाप्त हो जायें तो प्राकृतिक सन्तुलन पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

प्रश्नों का वर्गीकरण उनकी शिक्षण–प्रक्रिया के सोपान को आधारित कर भी किया गया है। इस प्रक्रिया में दो सोपान क्रमशः शिक्षण तथा मूल्यांकन प्रमुख हैं। प्रश्नों को भी इसी रूप में अर्थात् परीक्षण–प्रश्न तथा शिक्षण–प्रश्न के रूप में बाँटा जा सकता है।

परीक्षण–प्रश्न

परीक्षण–प्रश्नों का उद्देश्य विद्यार्थी की प्रगति का मूल्यांकन करना होता है। शिक्षण–प्रक्रिया में यह मूल्यांकन निम्नलिखित तीन स्तरों पर किया जाता है–

(1) पाठ आरम्भ करने से पूर्व छात्र के पूर्व–ज्ञान का मूल्याँकन।

(2) पाठ के विकास के दौरान विभिन्न उद्देश्यों की सम्प्राप्ति का पता लगाना।

(3) पाठोपरान्त–शिक्षण–उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई, पता लगाना।

Scanned with CamScanner

शिक्षण–प्रश्न

अध्यापक शिक्षण के समय पाठ का विकास करने के लिए विद्यार्थी से विभिन्न प्रश्न पूछता है तथा इनके माध्यम से वह छात्र को नवीन ज्ञान खोजने में सहायता प्रदान करता है। चूँकि पाठ का विकास शिक्षण-बिन्दुओं के अनुसार होता है। अतः ये प्रश्न भी इसी के अनुरूप पूछे जाते हैं। कभी-कभी कुछ अध्यापक पाठ के सभी तथ्य प्रश्नों के माध्यम से ही निकलवाना चाहते हैं, परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, ऐसे तथ्य जो छात्र प्रश्नों के द्वारा नहीं बना संकते हों, अध्यापक को 'अध्यापक-कथन' द्वारा उन्हें बता देने चाहिए। प्रश्न पाठ के विकास में सहायता करने के साथ-साथ बालक को क्रियाशील बनाते हैं।

अच्छे प्रश्न के गुण (Characteristics of a Good Question)

यदि हम चाहते हैं कि प्रश्नों में प्रवाह हो तो हमें इनका निर्माण करते समय पूर्ण सावधानी बरतनी चाहिए। एक अच्छे प्रश्न में निम्नांकित गुण होते हैं–

(1) उद्देश्य की प्राप्ति,

(2) भाषा सरल, शुद्ध व स्पष्ट,

(3) विद्यार्थी अपनी स्मृति, चिन्तन एवं तर्क शक्ति का उपयोग कर सकें,

(4) संक्षिप्त एवं प्रत्यक्ष,

(5) प्रश्न का उत्तर निश्चित तथा सदैव एक हो,

(6) क्रियाशीलता उत्पन्न करे,

(7) प्रश्न में तार्किक क्रम हो।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि सफल शिक्षण के लिए प्रश्नों का पूछा जाना आवश्यक है। यदि प्रश्न सुनियोजित तथा उत्तम प्रकृति के होंगे तो पाठ का विकास अच्छी प्रकार से हो सकेगा। अतः एक शिक्षक को प्रश्न पूछने की कला तथा कौशल की जानकारी होना आवश्यक है। प्रश्न पूछने की गति भी अलग-अलग पाई जाती है। कुछ अध्यापक प्रश्न शीघ्रता से पूछते हैं तथा कुछ प्रत्येक प्रश्न को पूछने के बाद एक या आधा मिनट का समय छात्रों को सोच कर उत्तर देने के लिए देते हैं। दोनों के अधिगम पर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ते हैं। प्रति इकाई समय में पूछे गये प्रश्नों की संख्या को प्रश्नों का प्रवाह (Fluency in Questioning) कहते हैं। प्रश्नों की शिक्षण-प्रक्रिया में उपादेयता को निम्नांकित तीन दृष्टि से सोचा गया है–

(अ) प्रश्न-संरचना (Structures)

(ब) प्रश्न पूछने की प्रक्रिया (Process)

(स) प्रतिफल (Output)

(अ) प्रश्न संरचना (Structure)

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रश्न में एक उद्दीपन होता है जो कि बालक को अनुक्रिया के लिए बाध्य करता है। यदि यह उद्दीपन अपने आप में स्पष्ट है तो बालक की अनुक्रिया भी स्पष्ट होगी। प्रश्न को इसकी बनावट की दृष्टि से विचारा जाये तो प्रथम तथ्य प्रश्न में प्रयुक्त भाषा तथा व्याकरण से सम्बन्धित उभरता है।

(क) **प्रश्न की भाषा** (Language of Question)–भाषा को सदैव ही विचारों का वाहक माना गया है। भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने विचारों को अन्य व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं। प्रश्न के सन्दर्भ

Scanned with CamScanner

में भी भाषा का इतना ही महत्त्व है। प्रश्न में प्रयुक्त भाषा व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध तथा उनमें प्रयुक्त शब्द पूछे जाने वाले प्रकरण से सम्बन्धित होने चाहिए। यदि भाषा अस्पष्ट होगी अथवा कठिन स्तर की होगी तो बालक प्रश्न को ठीक प्रकार से समझने में असमर्थ रहेगा। उसे प्रश्न के उत्तर देने में सामान्य से अधिक समय लगेगा तथा 'प्रश्नों का प्रवाह' कम हो जायेगा। उदाहरण के लिए कुछ प्रश्न जो कि भाषा की दृष्टि से उपयुक्त नहीं हैं, निम्नांकित हैं–

(1) सिकन्दर, जो कि अपने समय में एक महान् योद्धा था, ने आक्रमण के लिए भारत को उपयुक्त क्यों समझा ?

(2) आप कहाँ रहते हैं ?

(3) Who teaches mathematics ?

(4) न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण को सिद्ध करने के लिए कौन–सा प्रयोग किया है ?

उपर्युक्त प्रश्नों को ठीक प्रकार से निम्न रूप में लिखा जा सकता है–

(1) सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण क्यों किया ?

(2) आप किस नगर में रहते हैं ?

(3) Who teaches you mathematics ?

(4) न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण को सिद्ध करने के लिए कौन–सा प्रयोग किया था ?

(2) **(ख) संक्षिप्तता** (Conciseness)–प्रश्न की संक्षिप्तता से अर्थ प्रश्न की लम्बाई से है। यदि प्रश्न छोटे होंगे तथा उनमें अनावश्यक शब्दों का प्रयोग न किया जायेगा तो बालक उनका उत्तर आसानी से दे सकेंगे। कुछ अध्यापक आदतन विशेष शब्दों का प्रयोग अनावश्यक रूप से करते हैं जैसे क्या तुम बता सकते हो, 'क्या तुम में से कोई जानता है' इत्यादि। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से प्रश्न अनावश्यक रूप से लम्बा हो जाता है तथा छात्र का समय नष्ट होता है। प्रश्न इस प्रकार से पूछा जाए कि वह नपे–तुले शब्दों का प्रयोग करते हुए छात्र की चिन्तन–प्रक्रिया को जाग्रत कर दे।

कुछ प्रश्नों के उदाहरण जिनमें संक्षिप्तता का अभाव है, निम्न प्रकार से हैं–

(1) मुझे राजस्थान में मुख्यमन्त्री का नाम कौन बता सकता है ?

(2) क्या तुम में से कोई जानता है कि भाप के इन्जन का आविष्कार किसने किया ?

(3) पहाड़े का उपयोग कर मुझे 3×2 का मान बताओ।

(4) Can you tell me what is your name ?

उपर्युक्त प्रश्नों में संक्षिप्तता का अभाव है। इनमें कुछ ऐसे शब्दों का उपयोग कर लिया गया है जिनका प्रश्न में रखे जाने का कोई औचित्य नहीं है। उपर्युक्त प्रश्नों का शुद्ध एवं संक्षिप्त रूप नीचे दिया जा रहा है–

(1) राजस्थान के मुख्यमन्त्री का क्या नाम है ?

(2) भाप के इन्जन का आविष्कार किसने किया ?

(3) 3×2 का मान बताइये।

(4) What is your name ?

संक्षिप्तता का अर्थ यह भी नहीं है कि प्रश्न इतना छोटा हो जाय कि छात्र प्रश्न को ही न समझ सकें। कभी–कभी अध्यापक समयाभाव के कारण संक्षिप्त प्रश्न इस प्रकार के भी बना लेते हैं जिसमें यह स्पष्ट नहीं होता कि छात्र को क्या करना है तथा किन परिस्थितियों में करना है। उदाहरण के लिए–

आयतन तथा दाब में क्या सम्बन्ध होगा ?

इस प्रश्न में किसका आयतन तथा किन परिस्थितियों में सम्बन्ध ज्ञात करना है, स्पष्ट नहीं है। सही रूप में यह प्रश्न इस प्रकार पूछा जावेगा–

Scanned with CamScanner

यदि ताप स्थिर रहे तो वायु के आयतन तथा दाब में क्या सम्बन्ध होगा ?

अतः अध्यापक को प्रश्नों का निर्माण करते समय प्रश्न संक्षिप्त रूप में इस प्रकार बनाने चाहिए कि ये स्पष्ट रूप से छात्र को उत्तर देने की पृष्ठभूमि प्रदान कर सकें।

(ग) **प्रासंगिकता** (Relevance)—प्रश्न पाठ्यवस्तु से सीधा सम्बन्धित होना चाहिए। कभी-कभी अध्यापक ऐसे शब्दों, पदों या प्रत्ययों का उपयोग अपने प्रश्न में कर बैठता है जिनका विद्यार्थियों ने पूर्व में अध्ययन नहीं किया हो इस प्रकार के शब्द अप्रासंगिक होने पर बालक के सम्मुख कठिनाई उत्पन्न कर देते हैं। अप्रासंगिक तथ्यों से विद्यार्थी भ्रमित हो जाता है तथा उसका ध्यान इन तथ्यों को समझने में लग जाता है। अतः अध्यापक को चाहिए कि वह प्रश्न ऐसे करे जो कि सीधे ही पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित हों तथा उस प्रश्न में प्रयुक्त शब्द सरल तथा एक अर्थ वाले हों।

प्रासंगिकता का एक अर्थ यह भी है कि अध्यापक जब ज्ञान के एक पक्ष से प्रश्न पूछ रहा हो तो वह अचानक ऐसे प्रश्न न करे जिनका तालमेल इन प्रश्नों से न हो।

उदाहरण

(अध्यापक नक्शा दिखाकर प्रश्न पूछ रहा है)

(1) भूमध्य रेखा कितनी डिग्री अक्षांश पर स्थित है ?

(2) भूमध्य रेखीय प्रदेश की जलवायु कैसी है ?

(3) यहाँ के निवासियों का मुख्य धन्धा क्या है ?

(4) अधिक वर्षा के कारण यहाँ की भूमि कैसी है ?

(5) राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में वर्षा कम क्यों होती है ?

(ये प्रश्न अप्रासंगिक हैं)

(घ) **प्रश्न की बनावट**—प्रश्न को बनाते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) एक प्रश्न में एक ही बात का पूछा जाना उपयुक्त होता है। यदि एक प्रश्न में एक से अधिक उत्तर होंगे तो इससे छात्र भ्रमित होगा।

उदाहरण प्रस्तुत है—

प्रश्न—मक्खी कौन-कौन से रोग किस प्रकार फैलाती है ?

इस प्रश्न को प्रश्नों में इस प्रकार पूछा जा सकता है—

प्रश्न—(1) मक्खी कौन-कौन से रोग फैलाती है ?

(2) मक्खी किस प्रकार रोग फैलाती है ?

(2) अध्यापक को प्रश्नों की बनावट इस प्रकार नहीं बनानी चाहिए कि छात्र उसका उत्तर हाँ या नहीं में दे। हाँ/नहीं प्रकार के प्रश्न के उत्तर में बालक को उत्तर का अन्दाज करने की 50 प्रतिशत सम्भावना बनी रहती है। उदाहरण के लिए—

"क्या अशोक न्यायप्रिय सम्राट था ?"

यह प्रश्न यदि "अशोक को न्यायप्रिय सम्राट क्यों कहते हैं ?" रूप से पूछा जाये तो केवल 'हाँ' या 'नहीं' कहने से उत्तर पूर्ण नहीं होता है। बालक को वास्तव में अशोक की न्यायप्रियता के बारे में सोचना होगा तथा उदाहरण भी प्रस्तुत करने होंगे।

(ङ) **वस्तुनिष्ठता** (Objectivity)—प्रश्न इस प्रकार का हो कि उसका प्रत्येक स्थिति में केवल एक उत्तर हो। इस प्रकार के प्रश्न पूछने से छात्रों के एक उत्तर ही सही माने जाते हैं। छोटे प्रश्न तथा

Scanned with CamScanner

उनके लघु उत्तरों से पाठ का विकास तेजी से होता है। दूसरे शब्दों में प्रश्नों का प्रवाह बढ़ता है। यदि प्रश्न के कई उत्तर होंगे तो अध्यापक को एक प्रश्न को पूरा करने में ही काफी समय लगेगा।

(ब) प्रश्न पूछने की प्रक्रिया (Process pf Questioning)

प्रश्न की बनावट उत्तम हो, परन्तु उसका प्रस्तुतीकरण ठीक प्रकार से न हो तो ऐसी स्थिति में वह सही रूप में छात्रों के सामने नहीं आ पाता है। अध्यापन की प्रक्रिया में प्रश्न का प्रस्तुतीकरण अध्यापक द्वारा किया जाता है। यदि प्रश्न पूछने की प्रक्रिया भी उत्तम हो तो बालक आसानी से प्रश्न को समझ लेता है तथा उसका उत्तर शीघ्र दे देता है। इससे प्रश्नों का प्रवाह बढ़ जाने की सम्भावना भी बनती है।

(1) उपयुक्त प्रश्न–गति (Speed of Asking Questions)

प्रश्न पूछने की गति का अपने आप में विशेष महत्त्व होता है। बालक की सोचने की गति अध्यापक की गति से धीमी होती है। अध्यापक ज्योंही एक प्रश्न पूछता है, उसे तुरन्त इसके उत्तर की आशा नहीं करनी चाहिए तथा प्रश्न पूछने के उपरान्त कुछ क्षण तक रुक कर फिर छात्रों को उत्तर बताने के लिए कहा जाना चाहिए। यदि अध्यापक प्रश्न पूछने के बाद कुछ सैकण्ड नहीं रुकते तथा तुरन्त उत्तर पूछते हैं तो छात्र प्रश्न को समझ कर उत्तर देने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। परिणामस्वरूप प्रश्नों का प्रवाह कम हो जाता है।

उदाहरण प्रस्तुत है–

अध्यापक–एक सप्ताह में कितने दिन होते हैं ?

(कुछ देर इधर–उधर देखकर, रवि की ओर इशारा करता है)

रवि–एक सप्ताह में सात दिन होते हैं।

अध्यापक–सप्ताह के प्रथम दिन का नाम क्या है ?

(पुनः इधर–उधर टहल कर, पिंकी की ओर इशारा करता है)

(2) अध्यापक–व्यवहार (Teacher Behaviour)

प्रश्न पूछते समय अध्यापक का व्यवहार सीधा–सादा व प्राकृतिक रूप में होना चाहिए। उसकी वाणी में मधुरता तथा तीव्रता होनी चाहिए। धीमी आवाज में पूछे गये प्रश्नों को छात्र पूर्णतः समझ नहीं पाएँगे परिणामस्वरूप वे उसका उत्तर देने में असमर्थ होंगे।

अध्यापकों में ऐसी आदत देखी गई है कि वे या तो प्रश्न को दो बार बोलते हैं या छात्रों के उत्तर को दोहराते हैं। दोनों प्रकार की क्रियाएँ समय को नष्ट करने वाली होती हैं तथा इसमें दोहरा समय लगता है। अध्यापक को चाहिए कि वह केवल पुनर्बलन (Reinforcement) करने के लिए ही छात्र के उत्तर को दोहराये अन्यथा नहीं।

कभी अध्यापक प्रश्न के अधूरे वाक्य बोलता है तथा छात्र 'स्थान पूर्ति' करते हैं। इससे कुछ छात्रों को पूरा प्रश्न समझ में नहीं आता है तथा कुछ अधूरे प्रश्न को नहीं समझ पाते हैं। अतः अध्यापक को प्रश्न पूछते समय कक्षा में पूरा वाक्य बोलना चाहिए जिससे कि बालक उसे समझ सकें।

जैसे "दिल्ली राजधानी है·····किस देश की ?"

इसे सही रूप में निम्न प्रकार से पूछना चाहिए–

दिल्ली किस देश की राजधानी है ?

(स) प्रतिफल (Output)

जिस प्रकार शिक्षण का सम्बन्ध बालक के समग्र विकास से है उसी प्रकार प्रश्न का सम्बन्ध बालक के उत्तर से है। यदि बालक सही उत्तर नहीं दे पाता तो प्रश्न के स्वरूप पर प्रश्नचिह्न लग जाता

Scanned with CamScanner

है अतः प्रश्नों के निर्माण के समय बालक के मानसिक स्तर का ध्यान रखा जाना अत्यन्त आवश्यक है। यदि प्रश्न का स्तर उनके मानसिक स्तर के अनुकूल है तो छात्र उसका उत्तर शीघ्रतापूर्वक दे सकेंगे।

अध्यापक में बालक की रुचि अपना विशेष महत्त्व रखती है। प्रश्नों की विषयवस्तु घिसीपिटी या परम्परागत रूप में छात्रों के सामने प्रस्तुत की जाती है तो यह उनके ध्यान को अधिक समय तक केन्द्रित नहीं कर पायेगी। इसलिए यह आवश्यक है कि बालकों को पूछे जाने वाले प्रश्न रोचक हों तथा कुछ नवीनता लिए हुए हों।

इस प्रकार प्रश्न-कौशल विकसित करने के लिए अध्यापक को प्रमुख रूप से प्रश्न-संरचना, प्रश्न-प्रक्रिया तथा प्रतिफल का ध्यान रखना चाहिए।

प्रश्न पूछने का तरीका (Style of Questioning)

अध्यापक प्रश्न किस प्रकार पूछे, यह उसके विवेक तथा कक्षा की परिस्थिति पर निर्भर करता है। फिर भी कुछ सुझाव दिये जा रहे हैं जिन्हें अपनाकर वह अपने प्रश्न पूछने के तरीके को अधिक प्रभावशाली बना सकता है=

(1) प्रश्न किसी एक विशेष छात्र को लक्ष्य करके पूछने के स्थान पर समस्त कक्षा को पूछे जाने चाहिए।

(2) प्रश्न पूछते समय अध्यापक को अपनी वाणी शान्त तथा संयत रखनी चाहिए। न तो अधिक धीमा और न ही अधिक ऊँची आवाज से प्रश्न पूछना चाहिए।

(3) प्रश्न की संख्या बोलकर जैसे पहला प्रश्न, दूसरा प्रश्न आदि नहीं पूछना चाहिए।

(4) समस्त कक्षा को प्रश्न पूछने के बाद यथासम्भव बालक का नाम लेकर उत्तर पूछना चाहिए।

(5) प्रश्न कक्षा के विभिन्न स्थानों पर बैठे छात्रों से पूछे जाने चाहिए।

(6) प्रश्न पूछते समय अध्यापक को कक्षा में टहलना नहीं चाहिए।

(7) प्रश्न पूछते समय उपयुक्त गति से विराम देते हुए बोलना चाहिए।

(8) अध्यापक को ऐसा प्रश्न नहीं पूछना चाहिए कि प्रश्न की भाषा में ही इसका उत्तर मौजूद हो।

अध्यापक के कक्षा-व्यवहार में प्रश्न पूछने की कला का विशेष महत्त्व है। यदि वह प्रश्नों का निर्माण ठीक प्रकार से करता है तथा विद्यार्थियों के स्तर, रुचियों आदि का ध्यान रखते हुए प्रश्नों को ठीक प्रकार से पूछता है तो उसके अध्यापन में सुधार लाया जा सकता है। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि प्रश्न करने की कला का महत्त्व स्वीकारे बिना कोई भी अध्यापक कक्षा में सफलतापूर्वक अध्यापन नहीं कर सकता। प्रश्न कला शिक्षण के अन्य कौशलों से महत्त्वपूर्ण मानी गयी है।

प्रश्न कौशल का मूल्यांकन प्रपत्र (Observation Schedule for Skill of Questioning)

अध्यापक का नाम : रोल नं :

प्रकरण : कक्षा :

दिनांक : समयावधि:

अध्यापक निम्न रेटिंग स्केल पर प्रश्न-कौशल का मूल्यांकन करेगा—

(1) उत्कृष्ट, (2) बहुत अच्छा, (3) अच्छा, (4) सामान्य तथा (5) असन्तोषजनक को प्रकट करता है। इसे प्रकट करने हेतु W का निशान लगावें।

कुशलता के घटक	1	2	3	4	5
1. व्याकरणिक शुद्धता					
2. प्रकरण से सुसम्बद्धता					

Scanned with CamScanner

है अतः प्रश्नों के निर्माण के समय बालक के मानसिक स्तर का ध्यान रखा जाना अत्यन्त आवश्यक है। यदि प्रश्न का स्तर उनके मानसिक स्तर के अनुकूल है तो छात्र उसका उत्तर शीघ्रतापूर्वक दे सकेंगे।

अध्यापक में बालक की रुचि अपना विशेष महत्त्व रखती है। प्रश्नों की विषयवस्तु घिसीपिटी या परम्परागत रूप में छात्रों के सामने प्रस्तुत की जाती है तो यह उनके ध्यान को अधिक समय तक केन्द्रित नहीं कर पायेगी। इसलिए यह आवश्यक है कि बालकों को पूछे जाने वाले प्रश्न रोचक हों तथा कुछ नवीनता लिए हुए हों।

इस प्रकार प्रश्न-कौशल विकसित करने के लिए अध्यापक को प्रमुख रूप से प्रश्न-संरचना, प्रश्न-प्रक्रिया तथा प्रतिफल का ध्यान रखना चाहिए।

प्रश्न पूछने का तरीका (Style of Questioning)

अध्यापक प्रश्न किस प्रकार पूछे, यह उसके विवेक तथा कक्षा की परिस्थिति पर निर्भर करता है। फिर भी कुछ सुझाव दिये जा रहे हैं जिन्हें अपनाकर वह अपने प्रश्न पूछने के तरीके को अधिक प्रभावशाली बना सकता है—

(1) प्रश्न किसी एक विशेष छात्र को लक्ष्य करके पूछने के स्थान पर समस्त कक्षा को पूछे जाने चाहिए।

(2) प्रश्न पूछते समय अध्यापक को अपनी वाणी शान्त तथा संयत रखनी चाहिए। न तो अधिक धीमा और न ही अधिक ऊँची आवाज से प्रश्न पूछना चाहिए।

(3) प्रश्न की संख्या बोलकर जैसे पहला प्रश्न, दूसरा प्रश्न आदि नहीं पूछना चाहिए।

(4) समस्त कक्षा को प्रश्न पूछने के बाद यथासम्भव बालक का नाम लेकर उत्तर पूछना चाहिए।

(5) प्रश्न कक्षा के विभिन्न स्थानों पर बैठे छात्रों से पूछे जाने चाहिए।

(6) प्रश्न पूछते समय अध्यापक को कक्षा में टहलना नहीं चाहिए।

(7) प्रश्न पूछते समय उपयुक्त गति से विराम देते हुए बोलना चाहिए।

(8) अध्यापक को ऐसा प्रश्न नहीं पूछना चाहिए कि प्रश्न की भाषा में ही इसका उत्तर मौजूद हो।

अध्यापक के कक्षा-व्यवहार में प्रश्न पूछने की कला का विशेष महत्त्व है। यदि वह प्रश्नों का निर्माण ठीक प्रकार से करता है तथा विद्यार्थियों के स्तर, रुचियों आदि का ध्यान रखते हुए प्रश्नों को ठीक प्रकार से पूछता है तो उसके अध्यापन में सुधार लाया जा सकता है। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि प्रश्न करने की कला का महत्त्व स्वीकारे बिना कोई भी अध्यापक कक्षा में सफलतापूर्वक अध्यापन नहीं कर सकता। प्रश्न कला शिक्षण के अन्य कौशलों से महत्त्वपूर्ण मानी गयी है।

Scanned with CamScanner